विचार बिन्दु

तुम ये कभी मत सोचो कि आत्मा के लिए कुछ असंभव है। ऐसा सोचना तो सबसे बड़ा अधर्म है। अगर कोई पाप है, तो वो यही है; ये कहना कि तुम निर्बल हो या अन्य लोग निर्बल हैं। –स्वामी विवेकानंद

जलवायु परिवर्तन (ग्लोबल वार्मिंग) का मुकाबला हम शाकाहारी बनकर भी कर सकते हैं

गत सोमवार दिनांक 16.6.2025 से यू.एन. जून क्लाइमेट मीटिंग्स Subsidairy Bodies (SB 62) का अधिवेशन अन्तर्राष्ट्रीय सेन्टर Bonn (WCCB) बॉन (जर्मनी) में प्रारम्भ हुआ है। यह अधिवेशन दिनांक 16 से 26 जून, 2025 तक चलेगा। इसमें लगभग पांच हजार डेलीगेट्स भाग ले रहे हैं। इसका प्रारम्भ यू.एन. क्लाइमेट चेन्ज के सेक्रेटरी जनरल श्री साइमन स्टिल के सम्बोधन से हुआ।

कॉप-29 की मीटिंग बाकू अज़रबैजान में हुई थी और अब कॉप-30 का अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन नवम्बर 2025 में बेलम ब्राजील में होने जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन (ग्लोबल वार्मिंग) की विभीषिका से लडने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय संधि को जन्म दिया था, जिसे पेरिस एग्रीमेण्ट 2016 के नाम से पुकारा जाता है। इसके द्वारा कई सदस्य देशों ने अपने वायदों की घोषणा की थी कि वे जलवायु परिवर्तन के कारण प्रदूषण को कम करने के हेतु कदम उठायेंगे ताकि संसार का तापमान जो औद्योगिकीकरण के समय यानी 1990 के स्तर पर था, के स्तर में कोई कमी न हो। यदि वह 4.5 डिग्री से. तक बढ़ता है तो वह संसार के समाप्त होने की घटना बन सकता है। यदि कार्बन उत्सर्जन 2.0 डिग्री से. से अधिक भी हो गये तो वह संसार की 1/3 आबादी को निगल जावेगा।

सन 2015-2016 का काल ऐतिहासिक वर्ष माना जाता है। इसमें क्योटा प्रोटोकॉल का स्थान पेरिस एग्रीमेण्ट ने लिया था। 121 देशों ने अपनी घोषणा की थी। पेरिस एग्रीमेण्ट का जन्म भारत ने अथक परिश्रम के कारण ही संभव हो सका था। लेखक का सौभाग्य रहा कि वह भारत के सोशल ग्रुप (एनजीओ) सिकोयडिकोन, पैरवी के डेलीगेशन के रूप में वे पेरिस एग्रीमेण्ट को जन्म लेने की घटना का साक्षी रहा है। हस्ताक्षरकर्त्ता देशों ने जो वायदे किये थे वे स्वैच्छिक थे।

वस्तुत: जो एग्रीमेण्ट हुआ है वह 2020 से प्रभावी हुआ है। किन्तु कार्बन उत्सर्जन में कमी कैसे आयेगी इस पर विचार होता रहेगा। Natiionally Determined Contribution कैसे निर्धारित होगा। हस्ताक्षरकर्त्ता देश क्या सचमुच ऐसा कर सकेंगे जिससे बढ़ते हुये तापमान में कमी हो और क्या उनके ये कदम निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने में सहयोग होंगे। ऐसे कई प्रश्न अन्य कई विवादित ढेले पर जून अधिवेशन में वार्ता होगी, विचार होगा और जो निर्णय लेंगे उन्हें ब्राजील अधिवेशन में प्रस्तावों के रूप में पारित कर उनका Adaptation किया जावेगा ताकि वे पेरिस एग्रीमेण्ट का अभिन्न अंग बन सके।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण कई तूफान आये हैं, कहीं बाढ़ें आई हैं तो कहीं सूखा पड़ा है, ग्लेशियल पिघल रहे हैं, नदियां सिकुड रही हैं, नई नई बीमारियां फैल रही हैं, समुद्र की सतह बढ़ रही है। जैविक विविधता विनाश की ओर जा रही है। जंगल सिमट रहे हैं और रेगिस्तान बढ़ रहे हैं। धरती का तापमान निर्धारित स्तर से 1.5 डिग्री से. से आगे बढ़ता जा रहा है। 2.0 डिग्री से. तापमान बढ़ने से समुद्र में मिथेन का रिसाव प्रारम्भ होगा और धरती स्वयं गर्मी पाकर जलेगी।

आज की परिस्थितियों पर विचार करें तो पायेंगे जलवायु परिवर्तन में सुधार नहीं है अपितु स्थिति और भी अधिक भयंकर हो रही है। कोरोना के भूत ने एक नये रूप में जन्म लिया, बीजों की उपयोगिता खत्म हो रही है, नई-नई बीमारियां फैल रही हैं, प्रलय जैसी बाढ़ आ रही है। मानव ही नहीं अपितु प्राणियों का जीवन भी संकट में है। पहाड़ जो बर्फ से आच्छादित थे, वहां बर्फ देखने को नहीं है। गर्मी ने रौद्र रूप धारण कर लिया है। धरती पर सांस लेना भी दूभर हो रहा है। यूक्रेन रूस व इजरायल ईरान के युद्ध में CO_2 (कार्बनडाईऑक्साइड) का विसर्जन हो रहा है, वह भयंकर संकट को जन्म देने वाला है। धरती सम्भवत: मानव के रहने योग्य नहीं रहेगी।

> **यदि समस्त विश्व 8 दिन के लिये भी मांस खाना बंद कर दे तो पर्यावरण सुधर जावेगा। 50 प्रतिशत वैश्विक तापमान के लिये पशु सम्पदा उत्तरदायी है इससे 32,564 मिलियन टन कार्बनडाईऑक्साइड पैदा होती है। पशु उद्योग इतनी ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन करते हैं जितनी तो संसार के समस्त वाहन, कार, मोटर साईकिलें, ट्रेन, हवाई जहाज आदि भी नहीं करते हैं। मेनका गांधी का समर्थन करते हुये कई विशेषज्ञों ने कहा कि मांस के भोजन के कारण जंगल बर्बाद हो रहे हैं, पानी दूषित हो रहा है और बीमारियां बढ़ रहीं हैं।**

उपरोक्त परिस्थितियों में तापमान को 2.0 डिग्री से. से अधिक बढ़ने को रोकने का संकल्प पूरा होना सम्भव नहीं है और 1.5 डिग्री से. तक रोकने की सोचना सपना हो चुका है। हम इस प्राकर केवल पेरिस एग्रीमेण्ट तक ही ग्लोबल वार्मिंग को रोकने पर निर्भर नहीं रह सकते। हमें विकल्प की तलाश करनी होगी। 80 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन के लिये विकसित देश ही उत्तरदायी हैं। पेरिस एग्रीमेण्ट तक हमारा कार्बन उत्सर्जन 50 जीटी CO_2 हो चुका था। उसी को कम करने की कई हस्ताक्षरकर्ता देशों ने घोषणायें की थीं; किन्तु हमारी प्रगति नगण्य है। हमने अभी वैकल्पिक बिजली के उत्पादन की क्षमता बढ़ाने पर भी अधिक जोर दिया है।

विश्व के दो व्यक्तियों ने बीड़ा उठाया है कि "शाकाहारी बनो और विश्व को बचाओ"। एक हैं जॉन रोबिन्स, जिन्होंने बहुचर्चित पुस्तक **The Food Revolution: How Your Diet Can Help Save Your Life and Our World " लिखी है और दूसरी है दी सुप्रीम मास्टर efÛebieneF& keâer Hegmlekeâ **From Crisis to Peace: The Organic Vegan Way Is The Answer** दोनों लेखकों ने अकाटय प्रमाणों से स्पष्ट किया है कि शाकाहारी बनकर धरती को विनाश से बचाया जा सकता है। चिंगहाई का मत है खाने के लिये पशुओं को मारना, केवल बहुमूल्य पानी का अपव्यय ही नहीं है, इससे ऊर्जा व जमीन की बर्बादी भी हो रही है। यह प्रक्रिया 51 प्रतिशत ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन की जननी है। सुप्रीम मास्टर ने नारा दिया है, मांस जनित पदार्थ खाना बंद करो और शाकाहारी बनो और धरती को वैश्विक ताप से बचाओ। उन्होंने अपील की है कि पशुओं के मांस को अपनी जीवन चर्चा से मुक्त करो। उनका मानना है कि यदि समस्त विश्व 8 दिन के लिये भी मांस खाना बंद कर दे तो पर्यावरण सुधर जावेगा। 50 प्रतिशत वैश्विक तापमान के लिये पशु सम्पदा उत्तरदायी है इससे 32,564 मिलियन टन कार्बनडाईऑक्साइड पैदा होती है। पशु उद्योग इतनी ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन करते हैं जितनी तो संसार के समस्त वाहन, कार, मोटर साईकिलें, ट्रेन, हवाई जहाज आदि भी नहीं करते हैं। मेनका गांधी का समर्थन करते हुये कई विशेषज्ञों ने कहा कि मांस के भोजन के कारण जंगल बर्बाद हो रहे हैं, पानी दूषित हो रहा है और बीमारियां बढ़ रहीं हैं।

जॉन रोबिन्स ने अपनी उक्त पुस्तक में लिखा है कि एक पोण्ड गेहूँ के उत्पादन में जहाँ 25 गेलन पानी खर्च होता है वहाँ एक पोण्ड मांस के उत्पादन में 2500 गेलन पानी खर्च होता है। मांस पकाने में शाकाहारी की अपेक्षा 10 गुना ईंधन चाहिये। 2.5 एकड भूमि में खेती कर गोभी, आलू, चावल, मक्का पैदा कर क्रमश: 23, 22, 19 व 17 व्यक्तियों को फूड एनर्जी दे सकते हैं और बीफ से केवल एक व्यक्ति को एनर्जी मिलती है।

संविधान ने अनुच्छेद 51क में मूल कर्त्तव्य दिये हैं उसमें निर्देश है कि नागरिक वन, झील, नदी और वन्य जीवों की रक्षा करेंगे और उनका संवर्धन तथा प्राणी मात्र के प्रति करूणा भाव रखेंगे तथा हिंसा से दूर रहेंगे। अनुच्छेद 48 व 48क में स्पष्ट किया कि राज्य वन्य जीवों की रक्षा करेगा। गौ वध को निषेध किया है। देश में वाइल्ड लाईफ (प्रोटेक्शन) एक्ट 1972 के माध्यम से जंगली जानवर को अभयदान दिया। पशु क्रूरता निवारण अधिनियम व पशु कत्ल कारखानों रूल्स में पशु के प्रति क्रूरता न करने के निर्देश दिये गये हैं। संविधान में जो करूणा भाव मूल कर्त्तव्यों में निर्देशित किये हैं वह पशुवध के औचित्य को स्वीकार नहीं करता। प्राणी में मानव के अतिरिक्त पशु-पक्षी भी आते हैं।

संविधान के अतिरिक्त, यदि हम अन्य धर्मों की पवित्र पुस्तकों में भी पढ़े तो आपको जानकारी मिलेगी कि धार्मिक पुस्तक हादिस में मोहम्मद साहब ने कहा है सभी प्राणियों के प्रति दया भाव रखो। कुरान शरीफ में कहा है, जानवरों को अकारण मत मारो।

प्राणी मात्र के प्रति करूणा भाव सचमुच मानवीय चेतना की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। बान्धवा: प्राणिन: सर्वे का ब्रह्मनाद ही भारत की श्रेष्ठता का प्रधान रहस्य है। देश के कानूनों में पशुओं के प्रति क्रूरता का व्यवहार कानूनी अपराध है। पशुओं को भी जीने का अधिकार प्राप्त है।

यह सही है संसार की बडी आबादी मांस सेवन करती है, किन्तु मांस खाने वाले व्यक्ति कई बीमारियों से ग्रसित हो सकते हैं और शाकाहारी होना इसकी अपेक्षा उचित माना जा रहा है और समय की पुकार है। अत: यूरोप के कई देश धीरे-2 शाकाहारी हो रहे हैं। अमेरिका व अन्य देशों में भी कई मांसाहारी लोग स्वेच्छा से शाकाहारी हो रहे हैं। मांस खाना निजता का अधिकार हो सकता है; किन्तु मानव हित में स्वेच्छा से शाकाहारी बनना, वर्तमान समय की आवश्यकता है।

इस लेख का अभिप्राय केवल इतना ही है कि आज मानव व धरती माँ को कार्बन उत्सर्जन के खतरे से बचाने का यही एक मात्र सही मार्ग है कि संसार के लोग शाकाहारी हों।

पर्यावरण को लेकर जो भयावह परिस्थिति विश्व में है वह मानव सभ्यता के लिये एक चुनौती बन चुकी है, इसका समाधान तो ढूँढना ही होगा। धरती माँ को बचाना होगा।

शाकाहारी बनो - धरती माँ को बचाओ!

-अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

पक्षी प्रेमियों व प्रकृति प्रेमियों के लिए एक आदर्श पर्यटन स्थल है "बंध बारैठा"

संतोष कुमार मीणा

भजनलाल सरकार भरतपुर जिले को ईको टूरिज्म एवं जल संरक्षण के क्षेत्र में सुदृढ़ करने के लिए संकल्पबद्ध है। वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान इस उद्देश्य को प्राप्त करने में बड़ी भूमिका निभा रहा है। बंध बारैठा भरतपुर का सबसे बड़ा और प्रमुख बांध है, जो न केवल एक महत्वपूर्ण जलस्त्रोत के रूप में जाना जाता है, बल्कि एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में भी इसकी विशेष पहचान रखता है। यह बयाना तहसील में भरतपुर शहर से लगभग 50 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। वर्ष 1866 में भरतपुर के शासक जसवंत सिंह ने काकुंड नदी पर इस बांध का निर्माण शुरू किया, जो 1897 में राम सिंह के शासन में पूरा हुआ। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर यह स्थल पर्यटकों को भी आकर्षित करता है। हरे-भरे जंगलों, शांत जलराशि और विविध प्रजातियों के पक्षियों की उपस्थिति इसे जैव विविधता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाती है, खासकर पक्षी प्रेमियों और प्रकृति प्रेमियों के लिए यह स्थान एक आदर्श पर्यटन स्थल है। यह क्षेत्र भरतपुर के प्रसिद्ध केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के नजदीक होने के कारण भी पर्यटकों का ध्यान खींचता है।

यह बांध भरतपुर जिले के साथ-साथ आसपास के कई क्षेत्रों की जल आवश्यकताओं को पूरा करता है। पीने के पानी की आपूर्ति हो या खेतों की सिंचाई, बंध बारैठा इस क्षेत्र की जीवनरेखा के रूप में कार्य करता है, किसानों के लिए यह एक वरदान साबित हुआ है। इसकी मदद से सिंचाई की सुविधा बेहतर हुई है और कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है। इस बांध का निर्माण ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसका निर्माण तत्कालीन भरतपुर रियासत के शासकों द्वारा कराया गया था जिससे उस समय के प्रशासन की दूरदर्शिता और जल संरक्षण के प्रति जागरूकता का पता चलता है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में जल स्त्रोतों की सुदृढीकरण की दिशा में निरंतर सकारात्मक प्रयास किये जा रहे हैं। राज्य सरकार द्वारा बजट घोषणा 2025-26 में भरतपुर के सबसे बडे बांध बंध बारैठा की जल भराव क्षमता बढ़ाने के लिए 2 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। यह राशि ईस्टर्न राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट एसीपी के तहत स्वीकृत की गई। इस प्रक्रिया के तहत पार्वती-काली सिंध-चंबल लिंक परियोजना से अतिरिक्त पानी को ईआरसीपी तक लाया जाएगा जिससे शेष जल बंध बारैठा में संग्रहित किया जा सकेगा। इस परियोजना से न केवल जल संरक्षण को बढावा मिलेगा, साथ ही बंध बारैठा बांध की क्षमता बढ़ने से केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के वेटलैंड क्षेत्र में विस्तार होगा और हजारों देशी-विदेशी पक्षियों के साथ-साथ किसानों को सीधे लाभ मिल सकेगा। इससे जिले की पेयजल समस्या में भी राहत मिलेगी। इस बांध के लिए बजट घोषणा 2024-25 में डूंगरी बांध से बंध बारैठा होते हुए सुजान गंगा भरतपुर लिंक करने का प्रावधान किया गया। इस हेतु 2371 करोड़ रूपए की डीपीआर तैयार की गई है।

डीग-कुम्हेर-भरतपुर में सांवई-खेड़ा डिप्रेशन से गोवर्धन ड्रेन तक 6 करोड़ 25 लाख रूपए की लागत से पानी लिफ्ट करने का कार्य करवाया जायेगा।

बंध बारेठा बांध पर वाटर स्पोर्ट्स गतिविधियां शुरू करने तथा इको टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार प्रयासरत है। यहां प्राकृतिक रूप से सुरम्य वातावरण के साथ वर्षभर पानी की उपलब्धता आने वाले समय में पर्यटन गतिविधियों के लिए अनुकूल मानी जा रही है। रियासतकालीन यह बांध तीन तरफ से पहाड़ियों से घिरा हुआ है। जैव विविधता यहां वर्षभर देखी जा सकती है। यहां पर देशी-विदेशी पर्यटकों का आगमन बना रहता है। यहां पर राज्य सरकार द्वारा पर्यटकों को आधारभूत सुविधाओं का विकास करने के साथ इको टूरिज्म के लिए बजट-2024-25 में प्रावधान किया गया है जो बंध बारैठा के सुनहरे भविष्य की ओर इंगित करता है। इससे स्थानीय नागरिकों को भी प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलने के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बंध बारैठा की पहचान बनेगी।

आज के समय में जब जल संकट एक गंभीर समस्या बन चुका है, ऐसे में बंध बारैठा जैसे जलस्त्रोतों का संरक्षण और सुनियोजित प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह केवल एक जलाशय नहीं है, बल्कि भरतपुर की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक धरोहर का प्रतीक भी है, इसकी देखरेख और संरक्षण की जिम्मेदारी हम सभी की है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इससे लाभान्वित हो सकें और इसकी सुंदरता व उपयोगिता बनी रहे। बांध में है 1860 एमसीएफटी पानी, सालभर भरा रहता है :-बारैठा बांध की भराव क्षमता 29 फीट और 1860 एमसीएफटी है। यहां पूरे साल पानी भरा रहता है। पर्यटक सीजन अक्टूबर से फरवरी तक भी इसमें करीब 1200 एमसीएफटी पानी की उपलब्धता रहती है। इसलिए यहां एडवेंचर वाटर स्पोर्ट्स में एक्टिविटी पर्यटन स्थल के रूप में की पूरी संभावना है। इसके साथ ही रियासतकालीन महल और मानसून सीजन में यहां के झरने भी सैलानियों को आकर्षित करते हैं।

संतोष कुमार मीणा
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी, सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, भरतपुर।

बीकानेर संभाग में 20 से 23 जून तक बारिश का अलर्ट जारी

> **जून के अंतिम सप्ताह में मानसून बीकानेर तक पहुंच जाएगा**

बीकानेर, (निसं)। प्रदेश में मानसून प्रवेश कर चुका है, ऐसे में बीकानेर सहित पश्चिमी राजस्थान के जिलों में भी इसका बेसब्री के साथ इंतजार हो रहा है। तेज तापमान में गिरावट के बाद बारिश की उम्मीद की जा रही है, क्योंकि बादलों की आवाजाही हर रोज की तरह बनी हुई है।

मौसम विभाग की मानें तो सप्ताहभर तक बारिश की संभावना है। इसमें बीकानेर व जोधपुर संभाग में बारिश हो सकती है। वहीं शुक्रवार से इसकी प्रबल संभावना है। 20 जून से 23 जून तक बीकानेर में लगातार बारिश की प्रबल संभावना जताई गई है। हालांकि 24 व 25 जून को भी उम्मीद की जा रही है।

ऐसे में 19 जून से 25 जून तक लगातार बारिश बीकानेर संभाग में हो सकती है। मौसम विभाग ने 19 से 25 जून तक बीकानेर संभाग में बारिश का पूर्वानुमान दिया है। इसमें श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ व चूरू में बारिश की उम्मीद जताई गई है। वहीं 22 जून को बीकानेर जिले में भी बारिश की उम्मीद है। इसके बाद कुछ दिन तक बारिश का सिलसिला बीकानेर में भी जारी रह सकता है। मौसम विभाग की मानें तो जून के अंतिम सप्ताह में मानसून बीकानेर तक पहुंच जाएगा, इससे पहले 22 जून को मानसून की बारिश हो सकती है। रुक-रुक कर और कुछ क्षेत्रों में बारिश का दौर आगे भी जारी रह सकता है।

यूपीआई का बढ़ता दायरा: क्या भारत वास्तव में एक कैशलेस इकोनॉमी बन पाएगा ?

राम शर्मा

भारत में डिजिटल भुगतान प्रणाली ने पिछले एक दशक में अभूतपूर्व क्रांति ला दी है। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) इस डिजिटल भुगतान क्रांति का प्रमुख स्तंभ बनकर उभरा है। छोटे स्ट्रीट वेंडर्स से लेकर बड़े कॉरपोरेट्स तक, यूपीआई ने लेनदेन को अत्यंत सरल, तीव्र और सुरक्षित बना दिया है। निस्संदेह, यूपीआई के माध्यम से होने वाले ट्रांजेक्शन्स की बढ़ती संख्या ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गति प्रदान की है, लेकिन एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि क्या भारत वास्तव में निकट भविष्य में पूर्णत: कैशलेस इकोनॉमी बन पाएगा? इस दिशा में कई चुनौतियाँ हैं, जिनका सामना करना आवश्यक है।

यूपीआई : भारत की डिजिटल भुगतान क्रांति का आधार

यूपीआई की शुरुआत 2016 में भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) द्वारा की गई थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य बिना बैंक डिटेल्स साझा किए, त्वरित और सुरक्षित डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा देना था। आज यूपीआई न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना चुका है। 2023 तक यूपीआई के माध्यम से कुल लेनदेन की संख्या 10,000 करोड़ को पार कर गई, जो इसकी बढ़ती लोकप्रियता का स्पष्ट प्रमाण है। पेटीएम, फोनपे, गूगल पे और अमेज़न पे जैसे डिजिटल पेमेंट ऐप्स ने यूपीआई को आम जनता तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी यूपीआई को सिंगापुर, यूएई, फ्रांस और जापान जैसे देशों में स्वीकृति मिली है, जो भारत की डिजिटल पेमेंट इनोवेशन की सफलता को दर्शाता है।

यूपीआई ने पारंपरिक बैंकिंग प्रक्रियाओं को पूरी तरह से बदल दिया है। अब केवल एक मोबाइल नंबर या वर्चुअल पेमेंट एड्रेस के माध्यम से पलभर में पैसा ट्रांसफर किया जा सकता है। मोदी सरकार की डिजिटल इंडिया पहल और 2016 की नोटबंदी ने डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज चायवाले, सब्जीवाले, रिक्शाचालक और स्ट्रीट वेंडर्स तक यूपीआई स्वीकार करते हैं, जिससे कैशलेस ट्रांजेक्शन्स में भारी वृद्धि हुई है। इसके अलावा, कैशबैक, डिस्काउंट्स और रिवॉर्ड पॉइंट्स जैसे ऑफर्स ने यूजर्स को डिजिटल पेमेंट की ओर आकर्षित किया है।

यूपीआई के बढ़ते प्रचलन के बावजूद, भारत के पूर्णत: कैशलेस इकोनॉमी बनने में कई बाधाएँ हैं:-

भारत की लगभग 60 प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती है, जहाँ इंटरनेट कनेक्टिविटी और स्मार्टफोन की पहुँच सीमित है। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता की कमी के कारण बुजुर्ग और कम पढ़े-लिखे लोगों को डिजिटल भुगतान में कठिनाई होती है। डिजिटल भुगतान के साथ फिशिंग, स्कैम और यूपीआई फ्रॉड के मामले तेजी से बढ़े हैं।

साइबर सिक्योरिटी एनजीओ प्रहार के अनुसार, 2024 में भारत में साइबर अटैक की घटनाओं में 46 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सरकार द्वारा साइबर सुरक्षा को लेकर पर्याप्त उपाय नहीं किए गए हैं, जिसके कारण लोग डिजिटल लेनदेन करने से हिचकिचाते हैं। भारत की 80 प्रतिशत श्रमशक्ति अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है, जहाँ नकदी लेनदेन प्रमुख है।

छोटे व्यापारी और दैनिक मजदूरी करने वाले लोग अभी भी नकदी को प्राथमिकता देते हैं। ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या बनी हुई है, जिसके कारण डिजिटल भुगतान का प्रसार धीमा है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि यूपीआई ने भारत को कैशलेस इकोनॉमी की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है, लेकिन अभी भी एक लंबा सफर तय करना बाकी है। शहरी क्षेत्रों में डिजिटल भुगतान का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन ग्रामीण भारत में नकदी का वर्चस्व बना हुआ है।

भारत को पूर्णत: कैशलेस इकोनॉमी बनाने के लिए सरकार को कतिपय कदम उठाने होंगे, जैसे- डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना, साइबर सुरक्षा को मजबूत करना, ग्रामीण इंटरनेट इंफ्रास्ट्रक्चर को सुधारना और छोटे व्यापारियों को डिजिटल भुगतान के लिए प्रोत्साहित करना। यदि इन चुनौतियों का समाधान हो जाता है, तो भविष्य में भारत निश्चित रूप से एक पूर्णत: कैशलेस अर्थव्यवस्था बन सकता है। फिलहाल, भारत की अर्थव्यवस्था 'लेस-कैश' से 'कैशलेस' की ओर बढ़ रही है, और यूपीआई इस परिवर्तन का प्रमुख वाहक है।

- राम शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

राशिफल शुक्रवार 20 जून, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, रेवती नक्षत्र रात्रि 9:45 तक, शोभन योग रात्रि 11:47 तक, गर करण प्रात: 9:50 तक, चन्द्रमा रात्रि 9:45 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मीन, मंगल-सिंह, बुध-मिथुन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 9:50 तक है। सर्वार्थ सिद्धि सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। कुमार योग रात्रि 9:45 से सूर्योदय तक है। भद्रा रात्रि 8:35 से आरम्भ होगी। पंचक रात्रि 9:45 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:20 तक, लाभ अमृत 7:20 से 10:45 तक, शुभ 12:28 से 2:11 तक, चर 5:36 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:19

मेष

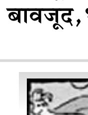

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा।

वृष

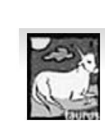

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कर्क

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

कन्या

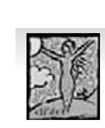

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नवीन कारोबारी अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।